"अर्थविज्ञान"

अर्थ शब्द की आत्मा है, शब्द शरीर है। ध्वनि-विज्ञान, पद-विज्ञान और वाक्य विज्ञान भाषा के शरीर हैं। इनमें भाषा के शरीर या बाह्यरूप का विवेचन, विश्लेषण किया जाता है। अर्थ आत्मा है। अर्थविज्ञान में शब्दार्थ के आन्तरिक पक्ष का विवेचन विश्लेषण किया जाता है। अर्थ विज्ञान के आन्तरिक पक्ष निम्न हैं :

1. अर्थ क्या है?
2. अर्थ का ज्ञान कैसे होता है?
3. शब्द और अर्थ में क्या सम्बन्ध है?
4. संकेतग्रह कैसे होता है?
5. मन में बिम्ब निर्माण कैसे होता है?
6. बिम्ब में अर्थबोध की प्रक्रिया।

अर्थ विज्ञान के बाह्यकारण या पक्ष निम्न हैं —

1. शब्दों के अर्थ में विकास,
2. अर्थ विकास की दिशाएँ।
3. अर्थ परिवर्तन के कारण।
4. एकार्थक और अनेकार्थक शब्दों के अर्थ का निर्माण या निर्णय।
5. संकेतग्रह के साधन। आदि।

जिस प्रकार शरीर के ज्ञान के बाद आत्मा का ज्ञान अपेक्षित है, उसी प्रकार ध्वनि, पद, वाक्य के ज्ञान के बाद अर्थरूपी आत्मा का ज्ञान अपेक्षित एवं अनिवार्य है। इसलिए भर्तृहरि ने वाक्यार्थरूपी प्रतिभा को आत्मा कहा है।

बलराम कुमार

अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ :

संसार में सभी वस्तुएँ परिवर्तनशील है। भाषा भी परिवर्तनशील है। जिस प्रकार ध्वनियों में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार प्रत्येक भाषा के शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है। इस अर्थ परिवर्तन को विकास सिद्धांत दृष्टि से "अर्थविकास" भी कहा जाता है। यह अर्थ परिवर्तन तीन प्रकार का होता है - 1. कहीं पर अर्थ का विस्तार होता है
2. कहीं पर अर्थ में संकोच होता है।
3. कहीं पर पुराने अर्थ के स्थान पर नए अर्थ आ जाता है।

1. अर्थ विस्तार :- कुछ शब्द मूल रूप में किसी विशेष या संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होते थे। बाद में उनके अर्थ में विस्तार हो गया। जैसे -

1. कुशल - कुशल शब्द का अर्थ था - कुशान् लाति। (कुशों को लाना या लेना) कुश का अग्रभाग तीक्ष्ण होता है उससे कटने का भय रहता है अतः कुश लाना चतुरता का सूचक था। यह शब्द धीरे-धीरे "कुश लाना" अर्थ छोड़कर चतुरता एवं निपुणता का अर्थ देने लगा। इस प्रकार उसके अर्थ में विस्तार हो गया।

2. तेल - सबसे पहले "तिल" का तेल द्रव्य निकला था। उसके आधार पर तैल-तेल नाम पड़ा। इसका अर्थ विस्तार हो गया। अब यह तेल या द्रव्य मात्र के लिए प्रयुक्त होने लगा - सरसों का तेल, मूंगफली का तेल आदि।

3. गोशाला - गोशाला का अर्थ गाय का घर होता है जबकि उसमें भैंस बकड़ी आदि जानवर बाँधने के बाद भी वह गोशाला ही रहता है।

2. अर्थ संकोच — अर्थ विस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में संकोच हुआ है। उसका विस्तृत अर्थ संकुचित या सीमित हो गया है। जैसे

1. गो — चलने वाले को "गो" गाय कहते थे। मनुष्य भी चलता है, उसे गो (गाय) नहीं कह सकते।

2. घोड़ा — सड़क पर चलने वाले को "अश्व" (घोड़ा) कहते थे। सभी चलने वालों को घोड़ा नहीं कह सकते।

3 पृथ्वी — (भूमि) नाम पड़ा। फैली हुई चादर, तम्बू, शामियाना को पृथ्वी नहीं कहेंगे।

इस प्रकार सभी वस्तु-नाम अर्थसंकोच के उदाहरण हैं। व्युत्पति के आधार पर उसका व्यापक अर्थ है, परन्तु वस्तु-नाम होने पर वे उस अर्थ में रूढ़ हो गए हैं।

3 अर्थादेश — अर्थादेश का अर्थ है, एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है - एक को हटाकर दूसरे को आना। अर्थादेश में शब्द का प्राचीन अर्थ लुप्त हो जाता है। और नया अर्थ आ जाता है। जैसे — असुर — मूल अर्थ असु+र "देवता था। बाद में सुर (देवता) का उल्टा अ+सुर = (राक्षस) अर्थ हो गया।

2. वर — मूल अर्थ "श्रेष्ठ" था अब केवल दुल्हा अर्थ रह गया।

3. साहस — साहस का प्राचीन अर्थ चोरी, डकैती आदि था। अब इसका "उत्साहपूर्णकार्य" अर्थ में प्रयोग होता है।

बलराम कुमार